स्वामी कुमार (स्वामी कार्तिकेय)

जीवन-परिचय : बारस अणुवेक्खा के रचयिता कुमार या स्वामी कुमार अथवा कार्तिकेय हैं। स्वामी कार्तिकेय ने कुमारावस्था में ही मुनि-दीक्षा धारण की थी और दारुण (कठोर) उपसर्ग को समताभाव से सहन कर स्वर्गलोक को प्राप्त किया था। स्वामी कुमार दक्षिण देश के निवासी अग्नि नामक राजा के पुत्र थे।

स्वामी कुमार प्रतिभाशाली, आगम-पारगामी, प्रसिद्ध आचार्य और बालब्रह्मचारी थे। इसी कारण इन्होंने सदैव पाँच बालयति तीर्थंकरों का स्मरण किया है।

आचार्य कार्तिकेय का समय अनेक प्रमाणों के आधार पर विक्रम संवत् की दूसरी-तीसरी शती का माना जाता है।

रचना-परिचय : स्वामी कार्तिकेय की एक मात्र रचना द्वादशानुप्रेक्षा है।

1. द्वादशानुप्रेक्षा : इस ग्रन्थ में 489 गाथाएँ हैं और इनमें अध्रुव, अशरण, संसार, एकत्व, अन्यत्व, अशुचित्व, आस्रव, संवर, निर्जरा, लोक, बोधिदुर्लभ और धर्म—इन बारह अनुप्रेक्षाओं का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है।

चंचल मन एवं विषय-वासनाओं के निरोध (रोकने) के लिये ये अनुप्रेक्षायें लिखी गयी हैं, जो संयम की शिक्षा देनेवाली और वैराग्य-जननी हैं।

द्वादश अनुप्रेक्षाओं के साथ इस ग्रन्थ में व्यवहार और निश्चयधर्म का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। इसके साथ सात तत्त्व, बारह तप, बारह व्रत, दस धर्म और ध्यान आदि का भी वर्णन किया है।

स्वामी कार्तिकेय की रचना-शक्ति शिवार्य और कुन्दकुन्द के समान है।